बाराबंकी जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन

प्रो. बी. के. गुप्ता
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
शिक्षाशास्त्र विभाग,
जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल पीजी कॉलेज, बाराबंकी
(उ.प्र.)

जगजीवन प्रसाद
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग,
जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल पीजी कॉलेज, बाराबंकी
(उ.प्र.)

सारांश :

प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य बाराबंकी जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना है। इस अध्ययन में विद्यालय के स्वरूप (राजकीय एवं निजी) तथा परिवेश (शहरी एवं ग्रामीण) के आधार पर विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। समायोजन के अंतर्गत सांवेगिक, सामाजिक एवं शैक्षिक पक्षों को सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा साधारण यादृच्छिक न्यादर्शन विधि के माध्यम से कुल 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु डॉ. ए.के.पी. सिन्हा एवं डॉ. आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए मध्यमान, प्रमाप विचलन तथा टी-परीक्षण का उपयोग किया गया। समायोजन मापनी का अधिकतम प्राप्तांक 60 निर्धारित किया गया है, जिसमें कम प्राप्तांक बेहतर समायोजन तथा अधिक प्राप्तांक समायोजन में अपेक्षाकृत अधिक कठिनाइयों का संकेत देते हैं। इस प्रकार अध्ययन के माध्यम से राजकीय एवं निजी विद्यालयों तथा शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के समायोजन की स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द : समायोजन, माध्यमिक स्तर, राजकीय विद्यालय, निजी विद्यालय, शहरी परिवेश, ग्रामीण परिवेश।

प्रस्तावना :

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल ज्ञान प्रदान करना ही नहीं, बल्कि उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना भी है। व्यक्तित्व विकास में समायोजन का विशेष महत्त्व है। समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने वातावरण, परिस्थितियों, आवश्यकताओं तथा सामाजिक संबंधों के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। विद्यार्थी जीवन में समायोजन की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि इस अवस्था में विद्यार्थियों को अनेक शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक एवं सामाजिक परिवर्तनों का सामना करना पड़ता है।

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी परिवार, विद्यालय, मित्र-समूह तथा समाज के साथ विभिन्न प्रकार की अंत:क्रियाओं में भाग लेते हैं। इस दौरान उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं, भावनात्मक प्रतिक्रियाओं तथा सामाजिक

Research Hub International Journal

व्यवहार में परिवर्तन दिखाई दे सकते हैं। यदि विद्यार्थी इन परिस्थितियों के साथ उचित सामंजस्य स्थापित कर पाते हैं, तो उनके विद्यालयी जीवन और व्यक्तित्व विकास को सकारात्मक दिशा मिल सकती है।

विद्यार्थियों के समायोजन को प्रभावित करने वाले संभावित कारकों में विद्यालय का स्वरूप एवं परिवेश भी सम्मिलित हैं। राजकीय एवं निजी विद्यालयों में उपलब्ध सुविधाओं, शिक्षण वातावरण तथा विद्यार्थियों को मिलने वाले सहयोग में भिन्नता हो सकती है। इसी प्रकार शहरी एवं ग्रामीण परिवेश में सामाजिक परिस्थितियों तथा शैक्षिक अवसरों में अंतर पाया जा सकता है। इन परिस्थितियों का विद्यार्थियों के समायोजन से संबंध हो सकता है। अतः बाराबंकी जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना शैक्षिक दृष्टि से उपयोगी है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व :

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का समायोजन उनके शैक्षिक अनुभवों, सामाजिक संबंधों तथा सांवेगिक विकास से संबंधित है। समायोजन संबंधी कठिनाइयाँ विद्यार्थियों के विद्यालयी जीवन और सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना आवश्यक है।

प्रस्तुत अध्ययन से राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन की तुलना करने तथा शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की समायोजन संबंधी स्थिति को समझने में सहायता मिल सकती है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षकों, अभिभावकों तथा विद्यालय प्रशासन को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप सहयोगात्मक वातावरण विकसित करने के लिए उपयोगी दिशा प्रदान कर सकते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शून्य परिकल्पनाएँ :

1. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमान प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमान प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोध विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि के माध्यम से विद्यार्थियों के समायोजन से संबंधित प्रदत्तों का संकलन करके उनका विश्लेषण किया गया है।

Research Hub International Journal

जनसंख्या एवं न्यादर्श :

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या बाराबंकी जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी हैं। अध्ययन के लिए कुल 300 विद्यार्थियों का न्यादर्श निर्धारित किया गया है। न्यादर्श के चयन हेतु साधारण यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त संकलन हेतु उपकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों के समायोजन के मापन के लिए मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।

- समायोजन मापनी: डॉ. ए.के.पी. सिन्हा एवं डॉ. आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :

प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है-

- मध्यमान : समूहों के औसत समायोजन प्राप्तांकों की गणना के लिए।
- प्रमाप विचलन : प्राप्तांकों में पाई जाने वाली भिन्नता का अध्ययन करने के लिए।
- टी-परीक्षण : दो समूहों के मध्यमान प्राप्तांकों के अंतर की सार्थकता जाँचने के लिए।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

सारणी 1: राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

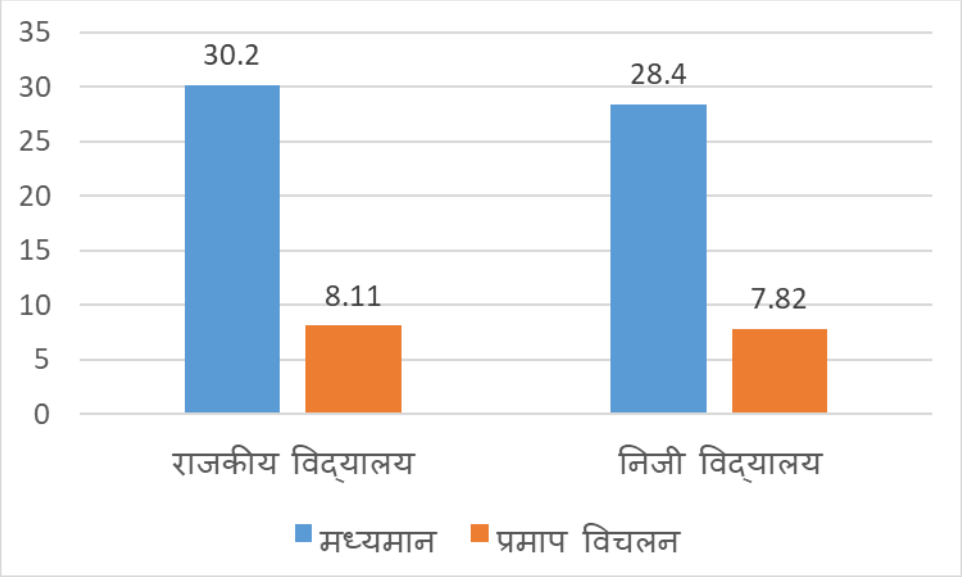
विद्यालय का स्वरूप	N	मध्यमान	प्रमाप विचलन	t-मूल्य	परिणाम
राजकीय विद्यालय	150	30.20	8.11	1.96	असार्थक
निजी विद्यालय	150	28.40	7.82		

व्याख्या :

सारणी से स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 30.20 तथा प्रमाप विचलन 8.11 है, जबकि निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 28.40 तथा प्रमाप विचलन 7.82 है। दोनों समूहों के मध्यमान प्राप्तांकों में 1.80 का अंतर पाया गया है। प्राप्त t-मूल्य 1.96 है। स्वतंत्र समूहों के t-परीक्षण में 298 स्वतंत्रता-अंश तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर द्विपक्षीय क्रांतिक t-मूल्य लगभग 1.97 है। चूँकि प्राप्त t-मूल्य 1.96, क्रांतिक t-मूल्य 1.97 से कम है, इसलिए दोनों समूहों के समायोजन में पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत करने के लिए पर्याप्त प्रमाण नहीं मिलते हैं।

Research Hub International Journal

निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान कम होने के कारण उनका समायोजन तुलनात्मक रूप से बेहतर दिखाई देता है, लेकिन इस अंतर को सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं माना जा सकता।



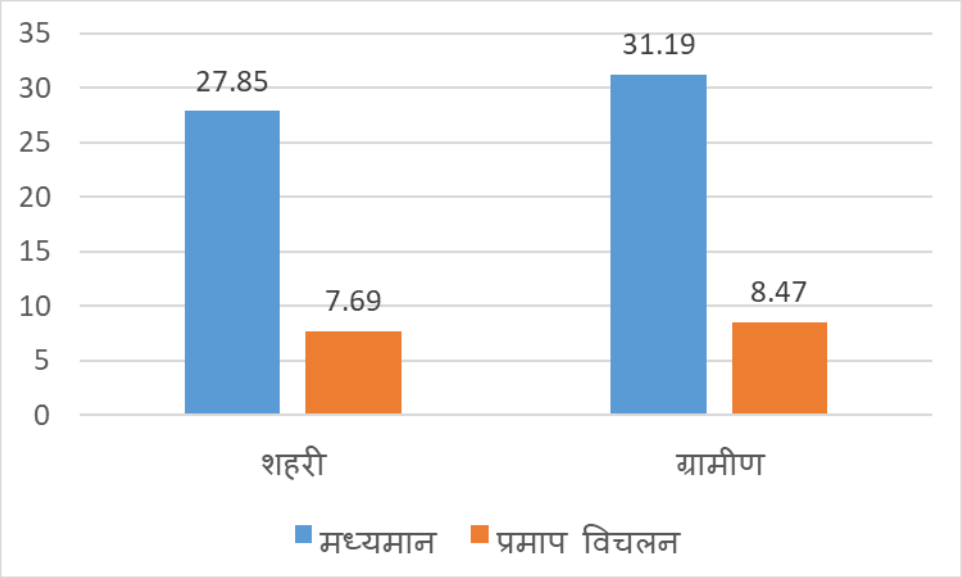
सारणी 2: शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

परिवेश	N	मध्यमान	प्रमाप विचलन	t-मूल्य	परिणाम
शहरी	150	27.85	7.69	3.58	सार्थक
ग्रामीण	150	31.19	8.47		

व्याख्या :

सारणी से स्पष्ट होता है कि शहरी परिवेश के विद्यार्थियों का मध्यमान 27.85 तथा प्रमाप विचलन 7.69 है, जबकि ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों का मध्यमान 31.19 तथा प्रमाप विचलन 8.47 है। दोनों समूहों के मध्यमान प्राप्तांकों में 3.34 का अंतर पाया गया है। प्राप्त t-मूल्य 3.58 है, जो 298 स्वतंत्रता-अंश तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर क्रांतिक t-मूल्य लगभग 1.97 से अधिक है। अतः दोनों समूहों के समायोजन प्राप्तांकों में पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान कम होने के कारण उनका समायोजन ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर दिखाई देता है। इस प्रकार परिवेश के आधार पर विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है।



निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बाराबंकी जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना तथा विद्यालय के स्वरूप एवं परिवेश के आधार पर उनकी तुलना करना है। अध्ययन के लिए निर्धारित उदाहरणात्मक आँकड़ों के विश्लेषण से राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जबकि शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया।

राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 30.20 तथा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 28.40 है। चूँकि कम प्राप्तांक बेहतर समायोजन को दर्शाते हैं, इसलिए निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का समायोजन तुलनात्मक रूप से बेहतर दिखाई देता है। हालाँकि, दोनों समूहों के बीच यह अंतर 0.05 सार्थकता स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है।

इसी प्रकार, शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान 27.85 तथा ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान 31.19 है। प्राप्त t-मूल्य 3.58 के आधार पर दोनों समूहों के बीच अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। निर्धारित स्कोरिंग नियम के अनुसार शहरी विद्यार्थियों का समायोजन तुलनात्मक रूप से बेहतर दिखाई देता है।

अतः प्रस्तुत आँकड़ों के आधार पर विद्यालय के स्वरूप की तुलना में परिवेश के आधार पर समायोजन में अधिक स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। इन निष्कर्षों को वास्तविक शोध के अंतिम निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत करने से पहले मूल सर्वेक्षण के प्रदत्तों से इनकी पुष्टि करना आवश्यक है।

शैक्षिक निहितार्थ :

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर विद्यार्थियों के समायोजन को बेहतर बनाने के लिए निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत किए जा सकते हैं:

- **सहयोगात्मक वातावरण :** विद्यालयों में सहयोगात्मक, सुरक्षित एवं तनावमुक्त वातावरण विकसित किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थी अपनी समस्याओं को सहजता से व्यक्त कर सकें।
- **सांवेगिक समायोजन :** विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने तथा सकारात्मक रूप से व्यक्त करने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।
- **शिक्षक की भूमिका :** शिक्षकों को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत, सामाजिक एवं शैक्षिक समस्याओं को समझते हुए आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए।
- **सामाजिक समायोजन :** समूह गतिविधियों, सामूहिक परियोजनाओं तथा सहपाठी सहयोग के माध्यम से विद्यार्थियों में सहयोग, सहिष्णुता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित की जानी चाहिए।
- **अभिभावक-शिक्षक सहयोग :** विद्यार्थियों के समायोजन में सुधार के लिए अभिभावकों एवं शिक्षकों के बीच नियमित संवाद स्थापित किया जाना चाहिए।
- **ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए सहयोग :** प्रस्तुत उदाहरणात्मक परिणामों में ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान अधिक है। यदि वास्तविक अध्ययन में भी ऐसा परिणाम प्राप्त होता है, तो उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप परामर्श, मार्गदर्शन तथा विद्यालयी सहयोग की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- **विद्यालयी परामर्श :** विद्यार्थियों की सांवेगिक, सामाजिक एवं शैक्षिक समस्याओं के समाधान के लिए विद्यालयों में परामर्श एवं मार्गदर्शन सेवाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची :

- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू., खान, जेम्स वी., एवं झा, अरुण कुमार (2016). शिक्षा में अनुसंधान (दसवाँ संस्करण). पियर्सन इंडिया एजुकेशन सर्विसेज।
- गैरेट, हेनरी ई. (1973). मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी. वैकिल्स, फेफर एंड सिमन्स।
- कौल, लोकमान्य (2009). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली (चतुर्थ संस्करण). विकास पब्लिशिंग हाउस।
- मंगल, एस. के. (2007). उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान (द्वितीय संस्करण). पी.एच.आई. लर्निंग।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (1997). शैक्षिक अनुसंधान का पाँचवाँ सर्वेक्षण: 1988–1992 (खंड 1). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।

Research Hub International Journal